'वासकसज्जा ज्योत्सना' आडम्बरों से मुठभेड़ करती कविताएँ

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग),
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर,
द्वारिकागंज, सुल्तानपुर

शोधसार

*समकालीन संस्कृत कविता जीवन यथार्थ के हर कठिन प्रश्न के सामने खड़ी मिलती है| खड़ी ही क्यों, निरन्तर उससे जूझती भी है और जीवन की सार्थकता के प्रति सचेष्ट होकर एक बेहतर भविष्य की नींव भी रखती है | आज की कविता का मूल उद्देश्य यही है | यह कविता समकालीन जीवन के विविध एवं व्यापक परिदृश्यों से सीधे जुड़ती है | **डॉ. हर्षदेव माधव** की कविताओं के भीतर जब हम प्रवेश करते हैं तो सहज ही महसूस हो जाता है कि समकालीन परिवेश की सच्चाईयों के प्रति जागरूक ही नहीं, बल्कि उन सच्चाईयों की विद्रूपताओं के विरूद्ध आवाज उठाने में सक्षम है | सृजन यदि अपने समकालीन परिवेश से आँखें चुरा लेता है तो वह न तो जीवन्त व यथार्थ बन पाता है और न उसका प्रभाव स्थायी होकर किन्हीं मूल्यों को उत्प्रेरित ही करता है | साहित्य वस्तुगत सत्य प्रकट करें,सभ्य और उदात्त समाज के लिए प्रयास ही काव्य का एकमात्र उद्देश्य है।*

बीज शब्द : समकालीन संस्कृत कविता, आधुनिक भावबोध ।

डॉ.हर्षदेव माधव समकालीन संस्कृत साहित्य के एक ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने संस्कृत में नवाचार का आविष्कार किया । यदि उन्हें संस्कृत नवाचार का प्रवर्तक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । डॉ.हर्षदेव माधव ने अनेकानेक नवीन विधाओं में रचनाएँ की हैं । बिना किसी लागलपेट के वे अपनी बात सीधे पाठक से कहते हैं । उनकी कविताएँ सामाजिक कुरीतियों से मुठभेड़ करती हुई नजर आती हैं । चाहे भ्रष्टाचारी नेताओं को आइना दिखाना हो या चाटुकार पत्रकारों अथवा धर्म की आड़ में अधर्म करते कथाकथित धर्माचार्यों को डॉ.हर्षदेव माधव की लेखनी सत्य कहने से पीछे नहीं हटती है ।

इसी बात को हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **नरेश सक्सेना** कहते हैं- "कवि को सदैव प्रतिपक्ष में रहना होगा तभी कविता भी प्रतिपक्ष की कविता होगी । कविता को अगर सुना नहीं गया तो समझिए कवि द्वारा कहा ही नहीं गया ।"

दुनिया भर में फैले आतंकवाद पर वे लिखते हैं कि जिस स्थान पर व्यक्ति कभी चैन अमन से रहा करते थे उसी स्थान पर आज मानव दहशत भरे वातावरण में जीने को मजबूर हैं ।

आसन कपोता:
रक्तलाञ्छनैर्भूमि-
र्दुनोत्यधुना ॥1॥[1]

यहाँ थे शांति के कबूतर
किन्तु
अब आतंकवाद से रक्तरंजित भूमि
पीड़ा देती है हृदय को ।

समाज में अपने –अपने स्वार्थ के लिए हो रही छीना झपटी पर वे लिखते हैं कि- आज परोपकार और सदाचार नाममात्र का रह गया है । सबको अपनी-अपनी पड़ी है । अपना उल्लू सीधा करने के लिए व्यक्ति किसी भी स्तर तक जा सकता है।

किरात:/श्येनो
गतौ व्याधश्चापल्ये

©Indira Gandhi National Open University

क्रौर्ये भल्लुक: ||6 ||[2]

शिकारी /गति में है
वह बाज़, चपलता में बाघ
क्रूरता में है भालू।

मरती हुई संवेदनाओं पर डॉ.हर्षदेव माधव लिखते हैं कि- आज के समय में कोई किसी का नहीं है। मनुष्य तब तक आप के आगे-पीछे चक्कर काटेगा जब तब उसका स्वार्थ सिद्ध नहीं हो जाता। कार्य हो जाने के बाद 'अपना काम बनता भाड़ में जाए जनता' वाली बात हो जाती है।

व्रणे दशति
मक्षिका दास्या: पुत्री
दुनोति पीड़ा ||7 ||[3]

घाव पर डंक मारती है
मक्खी-दु:ख देती है
कुलटा-पीड़ा !

काष्ठविक्रेता
प्रतीक्षते श्मशाने
नवशवाय ||139 ||[4]

लकड़ी बेचने वाला
प्रतीक्षा कर रहा है
श्मशान में
किसी नए शव के लिए।

आधुनिकता के नाम पर बढ़ रही अश्लीलता पर कवि लिखता है-

विवस्त्रं रुपं
दूरदर्शने-विरूपा
सभ्यताऽसभ्या ||9|| ||[5]

वस्त्रहीन रूप
टी.वी. पर कुरूप
असभ्य सभ्यता ॥

वेश्यावृत्ति पर वे लिखते हैं-

विलासगृहे
मार्गार्धेप्रतीक्षन्ते
वासना अपि ||37 ||[6]

हाई-वे पर
होटल
वहाँ राह देखती हैं
कामुक वासनाएँ भी।

सदा सुरभि:
किन्तु सौरभहीन:
वेश्यापर्यङ्क: ||65 ||[7]

हमेशा सुगन्ध वाला
परन्तु है निर्गन्ध
वेश्या का पलंग!

धर्मकञ्चुकै-
रभिमृष्टा वेपते
शान्तिरनाथा ||84 ||[8]

धर्म के चोलों से
बलात्कार का भोग बनी
शान्ति काँपती है अनाथ।

अहिंसाऽप्यत्र
राजनीतिसेविका
शीलभ्रष्टाऽस्ति ||85||[9]

©Indira Gandhi National Open University

यहाँ तो
अहिंसा भी
राजनीति की
सेविका और शीलभ्रष्टा है ।

दागी नेताओं और पूँजीपतियों की चाटुकारिता करने वाले बिकाऊ पत्रकारों को फटकार लगाते हुए डॉ.हर्षदेव माधव कहते हैं-

वृत्तान्त-शवा
मौकुली-पत्त्रकारै:
शतधा कृता: ||114 ||[10]

इन कौऐ पत्रकारों ने
समाचारों के मुर्दों को
बिखेर दिये हैं
सौ टुकड़ो में !

पूँजीपति माँ-बाप की आवारा संतानों को दुष्ट और आलसी कहने वे दबते नहीं हैं । कामुक प्रवृत्ति के इन लड़को को वे कुत्ता तक कह देते हैं ।

धनिकपुत्रा:
दुष्टालसा: कुक्कुरा:
कामोपद्रवा: ||135 ||[11]

धनिक के पुत्र
दुष्ट और आलसी

ये कुत्ते
'काम' के उपद्रव
करते हैं ।

इसके अतिरिक्त कुछ सौन्दर्य की रचनाएँ भी हैं, जहाँ प्रकृति का आनन्द भी है ।

निदाघे वृक्षा:
सम्बन्धानां कदम्बे
स्थिता मानवा: ||12||[12]

गर्मी की ऋतु में वृक्ष
सम्बन्धों के घेरे में
खड़े हैं (जैसे)
संसार में मनुष्य ॥

गन्तव्यस्थानं
विस्मारयति प्रेम्ण:
पुष्प-सौरभम् ||14||[13]

गंतव्य स्थान को
भूला देती है
प्रेम के पुष्प की यह सुगंध ॥

प्रणयपत्त्र
म्लानपुष्प्सौरभं
गोपितं प्रेम्णा ||22||[14]

प्रेम पत्र के
मुरझाये पुष्पों की सुगंध को
अपने में सुरक्षित रखा है
प्रेम ने ॥

अवकरेऽस्ति

©Indira Gandhi National Open University

ह्यस्तनप्रणयस्य
पुष्पस्तबक :||24||[15]

कचरे की टोकरी में
पड़ा है कल के प्रेम का पुष्पगुच्छ !

वृष्ट्यां भाति मे
जलार्द्रा चटकाऽस्ति
राजदारिका ||131||[16]

बारिश में
भीगी चिड़िया भी
मुझे लगती है राजकुमारी!

सारांशत: कहा जा सकता है कि- डॉ.हर्षदेव माधव ने अपने अनुभव संसार की प्रखरता को अपने कवि मन की संवेदनशीलता को काव्यात्मक भाषा में ढालकर अपनी कविताओं को निखारा है। इन कविताओं में हमारे समय का यथार्थ पूरे तीखेपन के साथ व्यक्त हुआ है। इनकी कविताएँ हमारे मन में एक टीस पैदा करती हैं। व्यवस्था की बदतरी और सामाजिक विकृतियों के प्रति हमें सजग बनाती हैं तथा हमें सोचने को बाध्य करती हैं।

सन्दर्भ-

1.वासकसज्जा ज्योत्सना, डॉ.हर्षदेव माधव, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् प्रकाशन नईदिल्ली, प्रथम संस्करण 2018 ई., पृष्ठ संख्या 13
2.वही, पृष्ठ संख्या 15
3.वही,पृष्ठ संख्या 16
4.वही,पृष्ठ संख्या 82
5.वही,पृष्ठ संख्या 17
6.वही, पृष्ठ संख्या 81
7.वही, पृष्ठ संख्या45
8.वही, पृष्ठ संख्या 54
9.वही, पृष्ठ संख्या 55
10.वही, पृष्ठ संख्या 69
11.वही, पृष्ठ संख्या 80
12.वही, पृष्ठ संख्या 18
13.वही, पृष्ठ संख्या 19
14.वही, पृष्ठ संख्या 23
15.वही, पृष्ठ संख्या 24
16.वही, पृष्ठ संख्या 78

©Indira Gandhi National Open University